* श्री सीतारामजी *

श्री सतगुरुवेनमः श्री हनुमतेनमः

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

अथ जीव पीव युगल विहार बहार अष्टोत्तरी दोहावली लिख्यते ॥

श्री सतगुरु पद कंजरज, रंज हरन धिय ध्याय।
श्री सीतावर प्राप्ति कर, रहस अलौकिक पाय ॥ १ ॥
श्री हनुमंत सुसंत पद, वंदि अनेकन बार।
जेहि करुना आनंद पर, मिलत सुनित्य बिहार॥ २ ॥
श्री साकेताधीश प्रभु, श्री सहस्र पद पद्म ॥
बंदौं बार अनेक ही, शिव मन अलि रस रुद्म ॥ ३ ॥
नमत नलिन पद श्री भरत, भरत प्रेम हिय रीति ॥
नीति निरत प्रभु प्रीति प्रद, हरन महा भव भीति ॥ ४ ॥
श्री लछिमन पद कमल नम, शुभ लच्छन दातार ॥
रहै हमेशे लच्छमन, करै नाम प्रभु प्यार ॥ ५ ॥
वारिज श्री रिपुहन सुपद, बारहिं बार मनाय ॥
अंत रंग वहिरंग रिपु, जिनकी कृपा नशाय ॥ ६ ॥
बंदौ श्री परिकर युगल, सेवा जिनहिं रसेश ॥
नाता शेशी शेश रत, बिहरत संग परेश ॥ ७ ॥
श्री कौशल्या आदिवहु, मात तात अवधेश ॥
बंदौ निशिवासर जिनहिं, भये सुपुत्र परेश ॥ ८ ॥
अब सबके पद सद सुनमि; माँगहुं बारहिं बार ॥

श्री सिय पिय जस रस कहौं, पुरवहु सुरुचि हमार॥ ९॥
पुनि श्री सतगुरु पद्म पद, मोद सद्म रज नैन॥
लाय पाय रुचि रुचिर जस, बरनौं अति सुख दैन॥ १०॥
एक समय परधाममधि, श्री श्री सीताराम॥
दुहुं दिशि परिकर सेवहीं, सेवा लहि अभिराम॥ ११॥
दिव्य सिंहासनजटित मनि, दिव्य सकल विधि साज॥
दिव्य सुपरिकर मध्य वर, महँरानी महाराज॥ १२॥
हँस हँस गरबहियां दिये, छहियां प्रीति लताहिं॥
कहिया छबि कवि क्योपरै, लखिलखि हिय उमगाहिं॥ १३॥
बोले मृदु मुसक्याय कें, सुनहु सखा मम जीव॥
माया मम अति बलवती, रचना किय कमनीय॥ १४॥
लोक हमारे बहुत हैं, तामें एक भुवि लोक॥
ताकों मेरी रुचि अहै, तुम आवो अवलोक॥ १५॥
अंतरंग संकल्प कोइ, वस्तु लैन नहिं होय॥
वहिरंगहु असपर्स नहिं, फकत आइये जोय॥ १६॥
आज्ञा शिर पर नाथ मम, कह्यो चरन शिर नाय॥
तुरतहिं राम कृपायतन, फौज समौज बुलाय॥ १७॥
जप तप संयम नेम व्रत, शम दम ज्ञान विज्ञान॥
विरति सुरति आदिक दिये, संग वीर बलवान॥ १८॥
चले मुदित शिर नाय प्रभु, चतुरंगनी सुसंग॥
आगे भनत नकीबगन, जय जय भरे उमंग॥ १९॥
मायाहू शिर नाय प्रभु, चली बहुत हरषाय॥
अति अद्भुत रचना किये, सो किमि बरनी जाय॥ २०॥
भयो शोर चहुं ओर यह, आवत प्रीतम राम॥

राग रागनी प्रगटि तन, गावत वाम ललाम ॥ २१ ॥
सीतल मन्द सुगन्ध जुत, वायू परसत अंग ॥
धीरज कों धीरज हरत, प्रगटत अंग अनंग ॥ २२ ॥
रंग रंग के द्रुमन में, रंग रंग के फूल ॥
रंग रंग के फल लगे, अवलोकत मन भूल ॥ २३ ॥
खान पान के बिबिध विधि, देखन विविध प्रकार ॥
किये अविद्या लखतमुद, परसत अतिदुख भार ॥ २४ ॥
ठौरिहिं ठौर बशंत वर, कीन्ही अति बिस्तार ॥
खट ऋतु बारह मासके, समै समै सु बिहार ॥ २५ ॥
आयौ अद्भुत लोक भुवि, सब अद्भुतहिं निहारि ॥
चकित भयो इत उत चितै, दीन्ही कौल बिसारि ॥ २६ ॥
जित देखत तित होत चित, अस हम कबहूँ दीख ॥
यह असमंजस है महा, प्रभु अवरहि दिय सीख ॥ २७ ॥
आगे चलत अविद्या, ताके पीछे जीव ॥
जीव कहौ कैसे लखै, जीव के पीछे पीव ॥ २८ ॥
ताहू में अति सूछ्म गति, जाकहँ वेद न जान ॥
ताकहँ यह जानै कहा, अति मति मंद नदान ॥ २९ ॥
ओक ओक अवलोकि कै, बिसरी सुधि परलोक ॥
यह निज जिय निश्चय करी, हम रहिहैं यहि लोक ॥ ३० ॥
घूमि घूमि देख्यौ सकल, अकल गई बवराय ॥
असल नकल लखि नकल में, असल बुद्धि ठहराय ॥ ३१ ॥
संग सिपाहिन से कहत, यहू यहू हम लेव ॥
यहू यहू तुम लेइहौ, उहाँ उत्तर का देव ॥ ३२ ॥
ज्ञान बीर तब हँसि कह्यो यह प्यारे सब झूँठ ॥

झूँठ शब्द ही सुनत हीं, गयौ जीव हिय रूठ ॥ ३३ ॥
तब बोले विज्ञानहूँ, अनुभव कर हिय खूब ॥
चलिये अब परलोक प्रिय, मिलिये प्रभु महबूब ॥ ३४ ॥
बहुत भाँति सब कहि थक्यो, तक्यो न नैन उठाय ॥
हाय हाय सब करि रहे, बिधि ये कौन बसाय ॥ ३५ ॥
हे लालन चलिये अवसि, प्रतिपालन के पास ॥
इहां रहे दुख पाइहौ, ह्वै है सबबिधि त्रास ॥ ३६ ॥
हम अबहीं जैहैं नहीं, कछु दिन रहब इहाँहि ॥
कहि दीजे करुनेश प्रभु, तुव मन में न डेराहिं ॥ ३७ ॥
चले शकल शिर नायके, डरते डरते हीय ॥
परतम श्री शाकेत मधि, जहँ बिहरत सिय पीय ॥ ३८ ॥
श्याम गौर यक ठौर ही, छबि की उठति तरंग ॥
दुंहु दिशि अलि अवली लसी, उठत सुहीय उमंग ॥ ३९ ॥
पाहि पाहि कहि पाहि कहि, परयौ चरन अकुलाय ॥
चरन शीश धर कहँ सखा, कहिये मोहिं समुझाय ॥ ४० ॥
कहौं कहा कहि जात नहिं, सुनिये अन्तरजामि ॥
जीव सखा भुवलोक में, रहिगे हे अभिराम ॥ ४१ ॥
हम अनेक बिधि पग परे, करे सु कोटि उपाय ॥
एकहु प्रभु मानै नहीं, मोहिं हठ दिये पठाय ॥ ४२ ॥
शोच बिमोचन शोच हिय, कीन्हे बिबिध प्रकार ॥
आनि मिलावो सखा मम, जीवन जीव हमार ॥ ४३ ॥
प्रीतम खेद विलोक प्रिय, अधिक हीय अकुलाय ॥
कृपावती तब आयके, बहुबिधि कहि समुझाय ॥ ४४ ॥
धन्य धन्य प्रीतम प्रिया, धन्य दीन अनुबंध ॥

पीव जीवप्रभु मिलन को, कहौं सुनौ सु प्रबंध ॥ ४५ ॥
चलौ परात्पर धाम ते, श्री सतगुरु वपु धारि ॥
भव अगाध निधि बीच से, कर गहि लेव निकारि ॥ ४६ ॥
मुदितक्षुधितजिमि असनलहि, गहि करकहहरखाय ॥
धन्य प्रान प्रिय की प्रिया, सही यही सुउपाय ॥ ४७ ॥
अर्घ्य वर्घ्य अवतीर्ण ह्वै, आयौ भुव साकेत ॥
खेद उदधि बिच मँगन अति, देख्यौ जीव अचेत ॥ ४८ ॥
श्री बिद्या परिवार संग, ज्ञान आदि विज्ञान ॥
सबल शास्त्र धर देख रिपु, किय निज मन अनुमान ॥ ४६ ॥
कह्यौ अविद्या निज दलहिं, बलहि छलहि करिजीव ॥
केहुं बिधि जान न पावई, जीव पास निज पीव ॥ ५० ॥
दुहुं दिशि बाढयौ रारि अति, काढयौ निज निज अस्त्र ॥
ह्वै भूमि एकत्र भय, सकै कौन गन शस्त्र ॥ ५१ ॥
बिद्या केवल स्वामि गुरु, याते फुर उर जीति ॥
निज बल गर्व अविद्यहिं, याते होय अजीति ॥ ५२ ॥
काम चल्यौ लै वाम संग, अति सुन्दरी सँवारि ॥
इतहिं उठयौ निष्काम भट, लखिबल भगी गँवारि ॥ ५३ ॥
लखि उत धायौ क्रोध भट, इतसे सन्मुख बोध ॥
जानि प्रबल रिपु भाग्यौ, मिल्यौ न कीन्हें सोध ॥ ५४ ॥
चाह चमारिनि उत उठी, इतसे वीर अचाह ॥
निरखि भगी जिय सगबगी, लगीमलिन मन माँह ॥ ५५ ॥
लोभ उठयो लै बस्तु बहु, बिबिध प्रकार सँवारि ॥
इत से बीर अनिच्छहि, लखि रिपु मदहि विदारि ॥ ५६ ॥
यहि बिधि बिबिध सुजुद्ध ह्वै, माया दलहिं कदम्ब ॥

भाग्यौ त्याग्यो भूमि रन, बिधहिं बज्यो सु बम्ब ॥ ५७ ॥
श्री सतगुरु बिन हित हितू, सब प्रकार लखि दीन ॥
लीन सुकर गहि जीवहीं, सिय पिय अरपन कीन ॥ ५८ ॥
अमित जन्म बीते भ्रमत, चौरासी लख जोनि ॥
कही नहीं कछु जात प्रभु, सही होनि अनहोनि ॥ ५९ ॥
रोम रोम बहु शोम रवि, केश केश बहु शेश ॥
कहे पार नहिं पावहीं, कृपा सुगुरु करुनेश ॥ ६० ॥
मैं यक मुख केहि बिधि कहौं, रहौं सुपद शिरनाय ॥
वलिहारी श्री स्वामि गुरु, सब बिधि लई अपनाय ॥ ६१ ॥
अब न होय प्रतिकूलता, रहै सु गुरु अनुकूल ॥
रविकुल रविछबि निरखि दृग, फूले जियहियफूल ॥ ६२ ॥
रामवल्लभा शरन गुरु, कियौ सु प्रभु सीतेश ॥
सन्मुख ही निशि दिन रहै, श्रीसतगुरु करुनेश ॥ ६३ ॥
श्रीगुरु जीवहि निज निकट, सहित प्रेम बैठाय ॥
सुनहु तात निज तन सदन, कहौं विविध समुझाय ॥ ६४ ॥
है रकार ही राम प्रभु, है मकार प्रिय सीय ॥
दीर्घाकार सु बीचहीं, उरगुरु फुर लखु जीय ॥ ६५ ॥
युगल बरन जानै बिना, युग युग भ्रमत अनेक ॥
नेक टिकन पावत नहीं, सो लखु सहित विवेक ॥ ६६ ॥
विश्व काय सुविराट नृप, कन्या प्रभावतीय ॥
मोद रासि इतिहास यह, सुनहु गुनहु निज जीय ॥ ६७ ॥
प्रभावती अति गुनवती, रूपवती विख्यात ॥
नखशिख वय शोभा महा, जननि जनक मुदबात ॥ ६८ ॥
करि सु विचार विवाह हित, ठान्यो यज्ञ महान ॥

तिहूँ लोक नृप आयऊ, ब्रह्म विश्नु भगवान ॥ ६६ ॥
नृप विराट सु विचार किय, वर कन्या सम जोग ॥
सो तौ कतहुँ लखात नहिं, समुझि भयो अति शोग ॥ ७० ॥
शत करोरि रामायनहिं, कीन्ही तत्व बिचार ॥
एक राम अवधेश सुत, जिनके चरित अपार ॥ ७१ ॥
जो प्रभु करैं सँयोग यह, सुजस होय चहुं ओर ॥
नृत्ति वती नृप घर नटी, उठी श्रवन सुनि शोर ॥ ७२ ॥
विविध कला छल बलहिं कर, प्रभावती अपनाय ॥
पंच तत्व मय सदन रचि, लय बैठी तहँ जाय ॥ ७३ ॥
चौरासी लखि कोट मधि, बार बार भरमाय ॥
जीव अंस प्रभुनहिं मरै, तन पुनि मर मर जाय ॥ ७४ ॥
जिमि कोई मद विवस व्है, बकै आन के तान ॥
तिमि निज बस करिजिय प्रकृति, पुरुष मिलन न सोहान ॥७५॥
जन्मत अरु मरतै बितै, चौरासी लख माहिं ॥
एक समय कुतिया भई, दुख कछु कहि नहिं जाय ॥ ७६ ॥
श्वान कटे तन लटपटे, कोड़ा परि बहु अंग ॥
बहुत संत आयो तहां, रटै नाम सउमंग ॥ ७७ ॥
श्री ठाकुर सेवा भई, बट्यो भोग सु प्रसाद ॥
संत प्रसाद श्वनी बनी, तन तज सजि अहिलाद ॥ ७८ ॥
पुनि विराट कन्या भई, पाय प्रसादहि संत ॥
महिमा सन्त प्रसाद की, कहि नहिं सकहिं अनंत ॥ ७९ ॥
श्री सिय पिय प्रिय मृदुल हिय, कृपावती सु पठाय ॥
सद सम्बन्ध कराय प्रभु, निज सु समीप बसाय ॥ ८० ॥
प्रभावती निज पतहिं गुनि, पुनि पुनि हिय हरषाय ॥

मेरेहिं में सब घटति है, हे श्री गुरु सब आय ॥ ८१ ॥
यहि विधि श्रीसतगुरु प्रभुहिं, जीवहिं कर सनबंध ॥
यह जिय मनन हमेश करु, अष्ट सु जाम प्रबन्ध ॥ ८२ ॥
अष्टकुंज की अष्ट सखि, सेवा अष्ट प्रकार ॥
करु अस्पष्ट विचार मन, नष्ट होय भवभार ॥ ८३ ॥

॥ अथ अष्ट कुंज नाम सेवा ॥

कनक भवन सिय पिय रमन, अलिगन विपुल समेत ॥
चिद विलास चिंतन सुचित, कीजे होय सचेत ॥ ८४ ॥
गान तान रस रास करि, सोये मृदुल प्रजंक ॥
अंग अङ्ग प्रति वारिये, कोटिन भानु मयंक ॥ ८५ ॥
श्रीमद चन्द्र कलादि बहु, जूथेश्वरि मृदु गाय ॥
हरन भैरवी चक्र प्रभु, भैरो राग सुनाय ॥ ८६ ॥
जागे युगल सुमहल मधि, कुंज कुंज सखि बृन्द ॥
बसन लटपटे अटपटे, बोलत सिय रघुनन्द ॥ ८७ ॥
मंगल थार प्रकार बहु, बारहि बारि उतारि ॥
अरत हर करि आरती, तन मन धन सब वारि ॥ ८८ ॥
चौकी मृदुल मयंक ढिग, करि मुख सुपद प्रछालि ॥
करहिं दन्त धावन मुदित, सेवहिं सब बिधि आलि ॥ ८९ ॥
दधि मिश्री मिश्रित मधुर, भोगलाय छबि पेखि ॥
मज्जनि कुंजहि गवन लखि, गर भुज हिय अवरेखि ॥ ९० ॥
जलबिहार सुखसार करि, चलि शृंगार सुकुंज ॥
विविधि प्रकार श्रृंगार करि, निज निज रुचि सखिपुंज ॥ ९१ ॥
कुंज कलेउ कलेउ करि, भांति भांति पकवान ॥
शुचि चित चिंतन जोग यह, जानहिं रसिक सुजान ॥ ९२ ॥

पांसा चौपर आदि बहु, खेलिखेलि शतरंज ॥
हारि जीति रस रीति वर, पेखि खिलत हियकंज ॥ ९३ ॥
भोजन साल रसाल की, सखी आय करजोरि ॥
कही समै भोजन भई, चले विहँसि चित चोरि ॥ ९४ ॥
विसद चौक चौकी उपर, मृदुल वसन सु बिछाय ॥
भोजन चोजन भरि सु करि, सरजूवारि पिलाय ॥ ९५ ॥
कर प्रछालि मुख धोय पग, पोंछि सुमृदुल अँगौछि ॥
पिय प्यारी पद चिन्ह लखि, रखि हियतजि मतिओंछि ॥९६॥
शयन कुंज बिच शयन करि. युगल मैन रतिहारि ॥
शोभा लखि लोभा सुमन, युगल बिहार बिहारि॥ ९७ ॥
पीलू रागहिं गान करि, चन्द्र कलादि नवेलि ॥
सुनि उठि मुखकर धोयके, मादकरस मुखमेलि ॥ ९८ ॥
पान खाय परि करन दै, सुकृती सुकृत सकेलि ॥
लली लाल सुखपाल चढ़ि, चले कुंज वर केलि ॥ ९९ ॥
षट ऋतु बारह मासके, सब कुंजन बिच साज ॥
समय समय सब होत हैं, संग सीय रघुराज॥ १०० ॥
विविध लतान बितान तर, होत बिहार अनेक ॥
रशिक सुजीवन जानही, करि निज चितहिं विवेक ॥ १०१ ॥
श्रीसरजू कूलन विशद, झूलन कुंज हिंडोर ॥
अनुकूलन झूलन लगे, सिय पिय श्यामलगोर ॥ १०२ ॥
रासकुंज रासेश्वरी, रचि सचि रास विलास ॥
युगल ललन ललना सहित, गान तान हर हास ॥ १०३ ॥
नृत्य क्रित्य करि ललिलला, कला अनेक विधान ॥
युगल बिहार बहार यह, रसिकन जीवन जान ॥ १०४ ॥

द्वादस वन रशिकन सुधन, प्रिय प्रियतमहि विहार ॥
श्री प्रमोद वन मध्य ही, कीजे नित्य बिचार ॥ १०५ ॥

॥ अथ द्वादश वन नामः ॥

वस्तु शृँगार शृँगार वन, फलित ललित लावन्य ॥
यथा योग अँग अंगही, रचिये होय अनन्य ॥ १०६ ॥
वन तमाल लतिका ललित, ललना गन कल केलि ॥
करहिविविध विधि सुख अवधि, सुकृतीसुकृतसकेलि ॥ १०७ ॥
आलय रहस रसाल वन, रस रस राज समाज ॥
स्वादी आजादी सुजन, लेत स्वाद सम्राज ॥ १०८ ॥
विविधि विहार विहार बन, विहरत अलि ललिलाल ॥
एकांतचिती चिंतके, हित वित पाय निहाल ॥ १०९ ॥
चंपलता चंपक सुवन, चंचरीक चित सेय ॥
लेय युगल आनंद रस, रहस वारि निज देय ॥ ११० ॥
चंदन वन विलसत नितै, सिय रघुनंदन साथ ।
ताप हरन शीतल करन, हिय जिय होत सनाथ ॥ १११ ॥
पारिजात मुद व्रातप्रद, सुमन सुरुचि सखिहार ।
युगल विहार स प्यार गर, पहिराइय दिलदार ॥ ११२ ॥
वन अशोक जिय शोक हर, कोक कोकि प्रिय पीय ।
लोक अवध साकेत पर, दोउ सुख प्रद कमनीय ॥ ११३ ॥
वन विचित्र चित्रावली, चित्रित चित्र विचित्र ॥
दिव्य नेत्र सतगुरु सुप्रद, चिंतत होत पवित्र ॥ ११४ ॥
वन कदम्ब दम्पति रमत, सम्पति रहस कदम्ब ॥
श्री मानस नंदनि सुतट, रसिक संत अवलम्ब ॥ ११५ ॥
वन अनंग सुविदेहजा, अलि रघुनंदन संग ॥

बिलसत बिहँसत अङ्ग अङ्ग, वारिय अमित अनंग॥ ११६॥
विपिन नाग केशरि नशरि, युगल विलास प्रकास॥
द्वादस वन मन रमन करु, लहु मुद द्वादस मास॥ ११७॥
प्रभावती यहसुख अती, रस दम्पती सँभारि॥
मोदवती जिय प्रदगती, अमित रती पति वारि॥ ११८॥
श्री मानस नंदनि कृपा, मानस विमल प्रवाहु॥
अवध धाम धामाधि पति, अगति सुगति प्रदलाहु॥ ११६॥
अष्टोत्तर शतदोहरा, गुंफित जस ललि लाल॥
प्रीति प्रतीति सुरीति कर, रचि गुरु कृपा सुमाल॥ १२०॥
श्री गुरु बार उदार अति, श्री गुरु उर पहिराय॥
सोभा लखि लोभा रहे, गोभा प्रेम सुपाय॥ १२१॥
सम्बत वनइससै अशी, नवसु बजे गुरुवार॥
फागुन शुक्ल सुसप्तमी, सद गुरु सदन मँझार॥ १२२॥
अवध धाम सरजू सुतट, श्री सत सदगुरु सदन॥
श्रीसिय राम ललाम छबि, लखि वारिय रति मदन॥ १२३॥
राम वल्लभा शरन प्रभु, मांगत युग कर जोरि॥
युगल विहार वहारहीं, चिंतै चित मति मोरि॥ १२४॥
मनन करै मन नाम प्रभु, पाय मनन आनंद॥
चित्त चमन सिय पिय रमन, दमन शमन भवफन्द॥ १२५॥
सब सज्जन मन मुदित ह्वै, दीजे यही अशीश॥
राम वल्लभा शरन हिय, खिले मिले सियईश॥ १२६॥
अमित चरित गुरुसीय वर, इति लिखते डर होय॥
प्रभु प्रेरित जस कछु लिखी, लखि लीजै खुशबोय॥ १२७॥

॥ शुभम्भूयात् श्रीसीता रामं भज॥

शुद्धाऽशुद्ध ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	प्रादुभावो	प्रादुर्भावो
,,	८	गुरुरपि	गुरूरपि
४	१०	होंउ	होउँ
५	७	कविनीय	कमनीय
७	८	रह	रहै
,,	६	भरी	भरो
१०	११	मौज	मौजैं
,,	१८	का	को
,,	२०	आप	आया
,,	२२	वस	वसैं
१२	१५	ऊरमिला	उरमीला
१३	२	उठो	उठे
१५	२०	धस्यो	धस्यो
२४	१७	सवरेनुह	सवरेनु है
,,	२१	साँचि	साँची
२५	६	लगै	लखै
,,	१८	भाति	भांति
२८	८	आश	आस
२६	२१	जानि	जान
३०	३	मखु	मख
,,	१५	अनिष्टिका	कनिष्टिका
,,	१५	ढूष्ट	दुष्ट
,,	१८	शेखो	शेषो
,,	१८	शेख	शेष
३१	२१	होयँ	होय
३२	८	धन	वन
,,	२४	वोज	चीज
३३	२३	चौरासी	चौराशी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	१८	वन्दौ	वन्दौं
,,	१९	शेशो	शेष
३९	८	हँस हँस	हँसि हँसि
,,	९	क्यो	क्यों
४०	१२	कबहूँ	कबहुँन
४१	१०	शकल	सकल
,,	१५	धर	धरि
,,	१७	अभिराम	अभिरामि
,,	२२	विलोक	विलोकि
४२	६	अर्य्य	आर्य्य
,,	९	शास्त्र	शस्त्र
४३	१	विधिहिं	विविधहिं
,,	९	लई	लइ
,,	२३	वात	व्रात
४४	१७	रटै	रटैं
,,	१९	अहिलाद	अहलाद
,,	८	कर	करि
,,	१०	लखि	लख
,,	११	मरमर	मरिमरि
,,	१४	वितै	विते
,,	२४	पतहि	पतिहिं
४५	१५	वारि	वार
,,	१६	अरत	आरति
,,	२०	मज्जनि	मज्जन
४७	७	करहि	करहिं
४७	११	एकान्तचितो	एकांतो चित्त
४८	१	अङ्ग अङ्ग	अङ्ग अँग
४८	२	नसरि	सरि